उत्पल चक्रवर्ती
utc_chakraborty@gmail.com

पाठ्यचर्या विकास एवं क्रियान्वयन

सार

यह लेख छत्तीसगढ़ राज्य में क्रियान्वयित 'पाठ्यचर्या विकास ' नामक पर्चे का ताकिर्क विश्लेषण करता है जो राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् विनियम 2 0 1 4 के पष्चात लागू हुआ था ! इस पर्चे को सभी विश्वविद्यालयों के शिक्षण - प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अभिन्न अंग बना दिया गया है ! यह लेख इस पर्चे के सन्दर्भ में पाठ्यचर्या के प्रकारों तथा उसके विविध अर्थो की भी विवेचना करता है व औपचारिक तथा अनौपचारिक पाठ्यक्रम के परिलक्षित लक्षणों तथा निहितार्थ को भी विश्लेषित करता है

राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् विनियम 2014 के पश्चात सभी विश्वविद्यालयों ने पाठ्यचर्या पर एक पर्चा बी.एड. एवं एम. एड. स्तर के पाठ्यक्रम में पाठ्यचर्या पर समाहित किया है। इसी क्रम में मुझे एम.एड. स्तर पर एक पर्चा पाठ्यचर्या विकास (Curriculum Development) के नाम से एक कोर्स पढ़ाने का मौका मिला। पहली बार मुझे इस पर्चे पर कार्य करना था इसलिए मेरे समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि हिन्दी में पाठ्य सामग्री कैसे प्राप्त होगी? फिर इस पर्चे में करीकुलम शब्द का उपयोग पाठ्यचर्या के लिए किया गया है अथवा पाठ्यक्रम के लिए यह स्पष्ट नहीं था। इस दौरान मैने कई पुस्तकें देखीं उनमें राष्ट्रीय इन्दिरा गाँधी मुक्त विद्यालय की सामग्री के सिवाय सभी में यह शब्द द्विअर्थी था। कुछ किताबों ने तो करीकुलम का अर्थ पाठ्यक्रम ही माना था। दूसरी परेशानी यह थी कि ज्यादातर विश्वविद्यालयों में किसी पाठ्यक्रम को पूरा करने के पीछे सीखने की अपेक्षा परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने की अभिप्रेरणा ज्यादा होती है इसलिए शिक्षार्थियों एवं शिक्षकों के कार्य करने के तरीके भी अलग होते है।

मेरे विश्वविद्यालय के पाठ्यचर्या विकास के पर्चे में निम्न इकाईयां सम्मिलित हैं-

1. पाठ्यचर्या विकास के सिद्धान्त
2. पाठ्यचर्या का दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक आधार
3. पाठ्यचर्या विकास
4. विषय सामग्रियों के संगठन की प्रक्रिया
5. पाठ्यचर्या मूल्यांकन

यहां यह आवश्यक नहीं है कि इकाई के शीर्षक से अन्दर की विषय वस्तु पूर्णतः सम्बद्ध हो तथा विश्वविद्यालय द्वारा परीक्षा में पूछे गए प्रश्न भी इन इकाईयों के शीर्षक/ उपशीर्षकों के आसपास घूमते हैं। इन पाठ्यक्रमों में यह विचार नहीं किया जाता कि एक पाठ्यचर्या शालेय गतिविधियों में किस प्रकार परिलक्षित होगी। मुख्यतः पाठ्यचर्या पर बने कोर्स का उद्देश्य केवल कुछ तकनीकी जानकारियां उपलब्ध कराना है। व्यक्तिगत तौर पे मैने यह महसूस किया कि पाठ्यचर्या विकास का यह पर्चा जो विश्वविद्यालय द्वारा पढ़ाया जा रहा है, वह एक शिक्षक या शिक्षक प्रशिक्षक को प्रभावशली बनने में विशेष मदद नहीं करता हैं। छात्राध्यापकों के साथ सम्पूर्ण सेमेस्टर के दौरान शालाओं में पाठ्यचर्या क्रियान्वयन पर हुई चर्चा के निचोड़ पर आगे चर्चा करना चाहूंगा जो पाठ्यचर्या क्रियान्वयन पर कई सवाल उठाते हैं।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़ में कार्य करते हुए मैंने जो अनुभव किया है उसके अनुसार भारत में साधारणतः पाठ्यचर्या को सीखने सिखाने हेतु सम्पूर्ण व्यवस्था से जोड़कर देखा जाता है। इस पर विचार करने के लिए सर्वप्रथम मैं पाठ्यचर्या की एक कार्यकारी परिभाषा के साथ शुरू करने जा रहा हूं जहां शैक्षणिक संस्थान के बाहर भी सीखने की परिस्थितियों को मान्यता दी जाती हो।

पाठ्यचर्या को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है: "सीखने के अवसर जो विभिन्न परिस्थितियों में निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु उपलब्ध कराये जाते है।"

यहां इस तरह से परिभाषित करने के पीछे तर्क यह है कि मैं पाठ्यचर्या और प्रत्येक परिस्थिति में सीखने के बीच अंतर कर रहा हूं। मैं इस स्तर पर यह नहीं कहना चाहता कि सभी शिक्षा पाठ्यचर्या का हिस्सा है क्योंकि निर्धारित उद्देश्य के बगैर यदि कुछ सीखा जाता है तो वह पाठ्यचर्या का हिस्सा नहीं हो सकता। इससे हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि उद्देश्यपूर्ण सीखने के कार्यक्रमों के संगठित प्रयासों को पाठ्यचर्या के रूप में देखा जा सकता है। परन्तु इस परिभाषा के साथ एक परेशानी भी उत्पन्न होती है कि एक शाला में जो सीखने के अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं क्या इनमें निहितार्थ उद्देश्यों से शिक्षक और शिक्षार्थी अवगत हैं? यदि ऐसा नहीं है तो फिर जो सिखाया जा रहा है क्या वह पाठ्यचर्या का हिस्सा नहीं है? शायद ऐसा नहीं है, क्योंकि उद्देश्यों की व्यापकता किसी न किसी तरह से अधिकतर शालेय गतिविधियों को सम्बोधित करने के नज़दीक होती है।

इस परिभाषा के आधार पर पाठ्यचर्या के कई प्रकार हो सकते हैं सबसे पहले हम शालाओं के लिए निर्मित पाठ्यचर्या को समझने की कोशिश करेंगे। दरअसल स्कूली पाठ्यचर्या के कई प्रकार हो सकते हैं, मान लिया जाए कि पहला प्रकार औपचारिक पाठ्यचर्या है जो साधारणतः केन्द्रियकृत होती है इसे राज्य स्तर पर या केन्द्र स्तर पर निर्मित किया जाता है इसकी स्वीकार्यता में लचीलापन लाने हेतु साधारणतः इसे पाठ्यचर्या की रूपरेखा के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

औपचारिक पाठ्यचर्या

औपचारिक पाठ्यचर्या में क्या होना चाहिए, यह तय कैसे होता है और कौन करता है इस पर यदि गम्भीरता से विचार किया जाए तो शायद हम इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि विमर्श की प्रक्रिया से गुजरते हुए चिंतनशील शिक्षा विचारको द्वारा यह निर्णय लिया जाता हैं कि विद्यार्थियों को क्या सीखना चाहिए, कैसे सीखना चाहिए, किस प्रकार के ज्ञान को महत्वपूर्ण माना जाता है और किस तरह के व्यवहार की अपेक्षा विद्यार्थियों से की जानी चाहिए। कई बार सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था के प्रति अपने पूर्वाग्रहों के आधार पर भी बातें तय हो पाती हैं परन्तु ऐसे कई दृष्टान्त हैं जब पाठ्यचर्या निर्माण की प्रक्रिया में समस्त हितग्राही वर्ग का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया तथा संवेदलशीलता के साथ सभी वर्गों के लिए न्यायोचित पाठ्यचर्या का निर्माण किया गया। लेकिन यह पाठ्यचर्या भी 10 वर्षों की दीर्घ अवधि में शिक्षकों तक नहीं पहुंची। यद्यपि शिक्षकों हेतु आयोजित कई प्रशिक्षणों में, कई लेखों में इन्हें सन्दर्भ के रूप में उपयोग किया गया। इस प्रकार पाठ्यचर्या कुछ अभिप्रायों का विवरण है। जिसमें अभिप्राय व्यक्त करने वाले, अभिप्रायों को क्रियान्वित करने वाले तथा इन अभिप्रायों के हितग्राही अलग-अलग होते हैं। इसलिए औपचारिक पाठ्यचर्या के उद्देश्य और इनके क्रियान्वयन के बीच काफी अंतर होता है।

पाठ्यचर्या की रूपरेखा स्कूली शिक्षा की प्रकृति और उद्देश्य के बारे में बहुत सी धारणाओं को दर्शाती है। उदाहरण के तौर पर यह माना जाता है कि, विषयों को सीखने में सबसे महत्वपूर्ण क्या है? कुछ निर्धारित प्रक्रियाएं अथवा सीखने की स्वतंत्रता? क्योंकि प्रत्येक विषय में ज्ञान, कौशल और प्रक्रियाएं हैं जो सीखने की शर्तों को निर्धारित करती हैं। यह पाठ्यचर्या विशेषज्ञ तय करते हैं कि क्या सिखाया जाना चाहिए। यह कई बार नीति निर्माताओं, शैक्षिक विशेषज्ञों, शिक्षकों और राजनीतिज्ञों के मध्य बहस की पृष्ठभूमि होती है क्योंकि कोई भी शिक्षा व्यवस्था राजनीति से हटकर अपना अस्तित्व नहीं ढूंढ़ सकती। आजकल यह विवाद उद्देश्यों के क्रियान्वयन पर होता है क्योंकि क्रियान्वयन के ढंग के माध्यम से भी उद्देश्यों का स्वरूप बदला जा सकता है। वैसे यह भी समझ पृष्ठभूमि में है कि किसी भी औपचारिक लिखित पाठ्यचर्या के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि सीखने का एक ऐसा दृश्य प्रस्तुत किया जाये जहां यह स्पष्ट रूप से मान लिया जाए कि जो सीखा है उसका मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

इसके साथ असल में यह समझना आवश्यक है कि किसी पाठ्यचर्या का निहितार्थ तभी उद्देश्यों के अनुरूप

होगा जब इसे पहले शिक्षक द्वारा समझा जाये और सीखने के अनुभवों को व्यवस्थित करने हेतु शिक्षार्थियों की समझ को सर्वाधिक महत्व दिया जाये एवं उसके अनुरूप क्रियान्वयन की योजना बनाई जाये। परन्तु भारत में शिक्षकों से यह अपेक्षा नहीं की जाती है कि वे स्वयं पाठ्यचर्या के अनुरूप शिक्षार्थियों के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण करें ताकि सीखने के तरीके एवं ज्ञान के सृजन में उन्हे एक जिम्मेदार विशेषज्ञ के रूप में देखा जा सके। एक तरफ तो यह बात जोर शोर से कही जाती है कि प्रत्येक बच्चा अपनी गति से अपने तरीके से सीखता है। वहीं दूसरी ओर शैक्षिक गतिविधियों को केन्द्रीकृत एवं नियंत्रित करने का प्रयास हर स्तर पर किया जाता है, शिक्षक की परिस्थितियों की उनके सीखने के अनुभवों के निर्माण व संगठन में कोई भूमिका नहीं होती अधिकतर राज्यों में यह देखा जा सकता हैं। इस प्रकार पाठ्यचर्या के निर्माण से लेकर क्रियान्वयन तक शिक्षक अपनी भागीदारी कहीं भी महसूस नहीं करते हैं।

शिक्षक द्वारा औपचारिक पाठ्यचर्या के प्रति अनभिज्ञता के कारण शालाओं में छिपी हुआ पाठ्यचर्या उभर कर आती है। यह पाठ्यचर्या निर्धारित उद्देश्यों को आंशिक रूप से अनदेखा करती है। यहां भी ज्ञान, मूल्य, व्यवहार और व्यवहार के नियमों से संबंधित संदेशों को सम्बोधित किया जाता है परन्तु इनसे प्राप्य उद्देश्य पाठ्यचर्या में निर्धारित उद्देश्यों से अलग हो सकते हैं। छिपी हुए पाठ्यचर्या कम से कम दो प्रकार की हो सकती है -

1. अपेक्षित छिपी हुआ पाठ्यचर्या और
2. अनापेक्षित छिपी हुआ पाठ्यचर्या।

अपेक्षित छिपी हुई पाठ्यचर्या में उन सरोकारों को शामिल किया जाता है जो औपचारिक पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं हैं, लेकिन इन्हें शिक्षक सक्रिय रूप से और जानबूझकर अपने विद्यार्थियों के लिए सीखने के लक्ष्य के रूप में लेकर आगे बढ़ाते हैं। इन्हें बच्चों तक ले जाने की प्रक्रिया में भिन्नता हो सकती हैं, लेकिन उनकी उपस्थिति सभी शैक्षणिक संस्थानों के लिए आम है, उदाहरण के लिए, स्कूल में शिक्षक अक्सर यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाने की कोशिश करते हैं कि पाठ्यचर्या कुछ निश्चित मूल्यों के विकास को बढ़ावा दे उदाहरण के लिए प्रत्येक शिक्षक को यह लगता है कि विद्यार्थियों को शिक्षकों के आदेशों का पालन करना, औपचारिक ज्ञान को परिवेश के ज्ञान से श्रेष्ठ मानने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए परन्तु औपचारिक पाठ्यचर्या इसे स्थान नहीं देती। उसी प्रकार क्रियान्वयन प्रक्रिया में आज भी शालाओं में रटने को विशिष्ट स्थान दिया जाता है परन्तु औपचारिक पाठ्यचर्या इसे हटाने की बात कहती है। उसी प्रकार विरोधार्थी शब्द पढ़ाते समय जब 'पुरुष का महिला' जैसे उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं तब शायद पाठ्यचर्या के संबंधित उद्देश्यों को आहत करते हैं। अपेक्षित छिपी हुए पाठ्यचर्या की सामग्री को संस्थाओं द्वारा अपने मूल्यों के आधार पर निर्धारित किया जाता है जिसमें स्थान, समाज, हितग्राही इत्यादि से भी यह पाठ्यचर्या प्रेरित होती है।

अनापेक्षित छिपी हुआ पाठ्यचर्या, एक और प्रकार की छुपी पाठ्यचर्या है जो शिक्षकों द्वारा जानबूझकर उपयोग में नही लाई जाती है, परन्तु अनजाने में ये कक्षा में बढ़ चढ़ कर अपनी उपस्थिति दर्ज करती है। सामान्यतः एक उदाहरण दिया जाता है कि, प्रारम्भिक कक्षाओं से एक स्पष्ट संदेश दिया जाता है कि अच्छी उपलब्धि हेतु कड़ी मेहनत और लगन अत्यंत महत्वपूर्ण है, वहीं दूसरी ओर शिक्षक द्वारा बच्चे में अन्तर्निहित प्राकृतिक क्षमता की स्वीकृति एक छिपी पाठ्यचर्याऐं की ओर इशारा करती है जो कभी-कभी कड़ी मेहनत के माध्यम से उपलब्धि प्राप्त करने की दिशा में बाधक बनता है। ऐसा ही कुछ परिस्थितियों का निर्माण शिक्षण संस्थान और समाज लड़कों और लड़कियों के लिए करते हैं, जैसे -जैसे इनकी उम्र बढ़ती है लड़कों की स्वतंत्रता को बढ़ावा दिया जाता है वहीं लड़कियों की स्वतंत्रता पर कई प्रतिबन्ध लगाए जाते हैं। कक्षा कक्ष की बैठक व्यवस्था से प्रारम्भ कर अन्य संचालन व्यवस्थाएं औपचारिक पाठ्यचर्या से प्रेरित नहीं होती हैं। इस तरह अनगिनत छिपी हुई पाठ्यचर्या कक्षा में संचालित होती है। इस तरह के उदाहरणों से पता चलता है कि अनजाने में छुपी पाठ्यचर्या बहुत ही व्यापक और बहुत शक्तिशाली है जो औपचारिक पाठ्यचर्या को इसकी मूल भावना से विचलित करती है।

सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था इस प्रकार की छिपी हुई पाठ्यचर्या से प्रेरित है जिस कारण औपचारिक पाठ्यचर्या का क्रियान्वयन अंशतः बाधित होता है। यह तथ्य सर्वविदित है कि न ही शिक्षक पाठ्यचर्या से परिचित हाते हैं और न हीं शैक्षिक प्रशासक, परन्तु सेवापूर्व अथवा सेवाकालीन प्रशिक्षण में कहीं भी इन मुद्दों को सम्बोधित नहीं किया जाता। मेरे लम्बे अनुभव के दौरान मैंने कभी यह नहीं पाया कि पाठ्यचर्या पर कभी शिक्षकों से सार्थक चर्चा की गई हो, उन्हें यह अवसर प्रदान किया गया हो कि वे अपने शाला के लिए एक पाठ्यचर्या विकसित कर सकें। प्राथमिक स्तर में तो शिक्षकों की पहुंच पाठ्यक्रम तक भी नहीं होती है उनके पास केवल एक पाठ्यपुस्तक होती है जिसे वो कक्षा कक्ष में उपयोगी एकमात्र और सर्वाधिक महत्वपूर्ण सामग्री के रूप में देखते हैं। अधिकतर क्षेत्रों में पाठ्यपुस्तक के किसी विशेष भाग को पढ़ाने के पीछे क्या उद्देश्य है तथा उन उद्देश्यों की पूर्ति हो रही है अथवा नहीं इसका मूल्यांकन कैसे हो इन तथ्यों से अंजान ही कक्षा में कार्य किया जाता है। पाठ्यपुस्तकों के अनुसार ही बच्चों की उपलब्धि तय की जाती है, पाठ्यचर्या में निर्धारित उद्देश्यों का यहां भी कोई स्थान नहीं होता। इस प्रकार पढ़ना, पढ़ाना, परीक्षा, उपलब्धि ये सभी यंत्रवत कुछ कर्मकाण्डों को सम्पन्न करने हेतु आयोजन होते हैं। आशा के अनुसार उपलब्धि नहीं प्राप्त होने पर सम्पूर्ण व्यवस्था एक दूसरे को जिम्मेदार ठहराकर अपने जिम्मेदारी से बचते हैं तथा अपने कार्यों को न्यायोचित ठहराते हैं, यही प्रक्रिया सालों साल से चली आ रही है और शायद तब तक चलेगी जब तक औपचारिक पाठ्यचर्या अपनी मूल भावना के साथ कक्षाओं में परिलक्षित नहीं होगी।